Class - B.Com II
Subject. M.F.I (S)
Paper — IV
Topic — I.B.R.D
Lecture Sequence - 4
Prepared by.
Dr Chandreshwar Pd. Sahu
Assistant Professor
Marwari College, Darbhanga
Email- cpsahu5161@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक (विश्व बैंक) (1)

विश्व के 44 देशों के प्रतिनिधियों ने 1944 को ब्रेटनवुड्स सम्मेलन में विचार-विमर्श करने के बाद अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक की स्थापना की। ~~जिसे~~ इसकी दूसरी सहायक संस्था अन्तर्राष्ट्रीय विकास ~~बैंक~~ संघ भी है। International Bank for Reconstruction and Development (IBRD) और International Development Association (IDA) को साथ मिलाकर इसे विश्व बैंक (World Bank) कहा जाता है।

विश्व बैंक मुख्य उद्देश्य :-

(1) पुनर्निर्माण और विकास - विश्व बैंक की स्थापना का उद्देश्य युद्ध पीड़ित देशों के पुनर्निर्माण तथा ~~पिछड़े~~ पिछड़े देशों की आर्थिक विकास में सहायता देना था। इस कार्य को सम्पादन के लिए उनके सदस्य देशों को उत्पादक कार्यों के लिए पूँजी लगाने में सहायता प्रदान करना होता है।

(2) विदेशी निवेश को प्रोत्साहन. - उत्पादन तथा विकास के लिए जिन क्षेत्रों में पूँजी की आवश्यकता होती है विश्व बैंक निजी उद्योगपतियों को पूँजी लगाने की सलाह देता है और आवश्यकता होने पर स्वयं भी आर्थिक सहायता

Scanned with CamScanner

की प्रदान करना है। यदि किसी देश में पूँजी उचित शर्तों पर उपलब्ध न हो तो विश्व बैंक स्वयं उस क्षेत्र में पूँजी लगाता है। जिससे धन की कमी के कारण आवश्यक विकास कार्यों में ~~बाधा~~ बाधा उत्पन्न न हो।

(3) भुगतान संतुलन :- अन्तर्राष्ट्रीय बैंक विकसित देशों को अल्प विकसित देशों में पूँजी लगाने के लिए प्रोत्साहित करता है जिससे उन देशों में उत्पादन में वृद्धि हो सके। श्रमिकों के रहन सहन का स्तर सुधार हो सके। साथ ही ~~संबंधित~~ सम्बन्धित देशों का भुगतान संतुलन भी व्यवस्थित होता रहे। इसका मुख्य उद्देश्य दीर्घकाल में अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को सम्य एवं संतुलित अवस्था में रखना है।

Scanned with CamScanner

(3)

(4) **पूँजी की व्यवस्था** – अन्तर्राष्ट्रीय बैंक सदस्य देशों में स्वयं पूँजी लगाता है तथा दूसरे देशों के पूँजीपतियों से पूँजी लगवाता है। इन दोनों वर्गों की पूँजी का इस ढंग से ~~सामंजस्य~~ सामंजस्य होना आवश्यक है कि आवश्यक क्षेत्रों में पूँजी पहले विनियोजित की जाय और विदेशों से प्राप्त मशीनें अथवा अन्य प्राविधिक सामान का श्रेष्ठतम प्रयोग हो सके। इस तरह विश्व बैंक विकास कार्य में पूँजी को प्राथमिकता के आधार पर मार्गदर्शक का कार्य करता है।

(5) **शान्तिकालीन अर्थव्यवस्था** - विश्व बैंक का यह भी उत्तरदायित्व होता है कि वह सदस्य देशों में लेन-देन तथा ऋण सम्बंधी जो भी कार्य करे उससे किसी देश की व्यापारिक व्यवस्था को हानि पहुँचाने की आशंका नहीं होनी चाहिए। युद्ध पीड़ित देशों की अर्थव्यवस्था को शान्तिकालीन अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने में विश्व बैंक को दायित्व सौंपा गया है।

विश्व बैंक का संगठन एवं प्रबंध -

विश्व का कोई भी देश विश्व बैंक का सदस्य हो सकता है लेकिन विश्व बैंक की सदस्यता प्राप्त करने के लिए पहले अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का सदस्य बनना अनिवार्य है। मुद्रा-कोष की सदस्यता छोड़ते ही उस देश की विश्व बैंक की सदस्यता समाप्त हो जाती है। यदि बैंक के कुल मत शक्ति का 75% मत से उसे सदस्य बनाये रहने का प्रस्ताव पास कर दिया जाय तो वह मुद्रा कोष का सदस्य न रहते हुए भी विश्व बैंक का सदस्य बना रह सकता है।

जब कोई देश विश्व बैंक की सदस्यता त्याग देता है तो वहाँ की सरकार तत्काल बैंक को किसी भी राशि का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होती है जबतक कि उस देश में दिया गया ऋण चुकता नहीं हो जाता।

विश्व बैंक की पूँजी :-

जब विश्व बैंक की स्थापना हुई उस समय अधिकृत पूँजी 10 अरब डालर रखी गयी थी।

यह पूँजी 1 लाख डालर के 1 लाख अंशों में विभाजित थी। बैंक की पूँजी में तीन-चौथाई बहुमत से वृद्धि की जा सकती है। 1988 में बैंक के प्रशासन के मंडल ने बैंक की अधिकृत पूँजी में 6.2 लाख शेयरों की वृद्धि की जिससे अधिकृत पूँजी 30 June 1988 को बढ़कर 91,436 मिलियन डालर हो गयी। 1989 को यह अधिकृत पूँजी बढ़कर 115,688 मिलियन डालर हो गया तथा 1992 में पूँजी 152.24 बिलियन अमरीकन डालर हो गयी। विश्व बैंक समझौता पत्र के अनुसार सदस्य देशों द्वारा खरीदे जाने वाले अंशों की संख्या प्रत्येक सदस्यों की सहमति से निश्चित की जाती है।

अभी हमारे देश के RBI ने कोरोना महामारी से निबटने के लिए MFI में 50 हजार करोड़ रुपये का योगदान दिया है। जिससे स्पष्ट होता है कि हमारा देश भी विकसित देशों के श्रेणी में अग्रसर हो रहा है।

— x —

Scanned with CamScanner